جنوری ۲۰۰۵ء/ذی الحجہ ۱۴۲۵ھ

ماہنامہ شعاعِ عمل لکھنؤ

قَالَ اللهُ تَبَارَکَ وَ تَعَالٰی

قَدْ جَاءَکُمْ مِنَ اللهِ نُوْرٌ وَ کِتَابٌ مُبِیْنٌ

بیشک اللہ کی طرف سے تمہارے پاس نور آیا ہے اور روشن کتاب

مؤسسۂ نور ہدایت حسینیہ غفران مآبؒ لکھنؤ-۳

R.N.I.No. UPBIL/2004/13526 - January -2005

Monthly

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

लखनऊ

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk
LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA
Phone : 2252230

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम

सैयेदुल उलमा मौलाना अली नक़ी साहिब क़िब्ला (ताबा सराह)
अनुवादक – मौलाना सुफ़यान अहमद नदवी साहिब

आपका दौर भी अपने वालिद बुजुर्गवार की तरह वही उबूरी हैसियत रखता था जिसमें शहादते हज़रत इमाम हुसैन (अ0) से पेदा हुए असरात की बुनियाद पर बनीउमैय्याकी सलतनत को हिचकोले पहुँचते रहते थे मगर तक़रीबन एक सदी की सलतनत की मज़बूती इसको थाम लेती थी बल्कि फ़ुतूहात के एतबार से सलतनत के दायरे को इस्लामी दुनिया में बहुत बढ़ता जाता था।

हज़रत इमाम बाक़िर (अ0) खुद वाक़ेआ–ए–कर्बला में मौजूद थे और जैसे बचपने का ज़माना था यानि तीन चार साल की उम्र थी मगर इस क़िस्से के असरात इतने सख़्त थे कि आम इंसानी हैसियत से भी कोई बच्चा इन असरात से अलग नही हो सकता था। चाहे वह लोग जो शुरुआत से ही ग़ैर मामूली समझ लेकर आये थे वह इस कम उम्री में जनाबे सकीना (अ0) के साथ–साथ यक़ीनन क़ैद व बन्द की तकलीफ में शरीक थे इस सूरत में इन्सानी और दीनी जज़बात के मातहत आपको बनी उमैय्या के ख़िलाफ़ जितना भी गुस्सा होता ज़ाहिर है चुनानचे आपके भाई ज़ैद बिन अली इब्ने हुसैन (अ0) ने एक वक़्त ऐसा आया कि बनी उमैय्या के मुक़ाबले में तलवार उठाई इसी तरह सादाते हसनी (अ0) में से बहुत से लोग कभी कभी बनी उमैय्या के ख़िलाफ़ खड़े होते रहे हालाँकि कर्बला के वाक़ेअः से सीधी तरह जितना तअल्लुक़ हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर को रहा था इतना जनाबे ज़ैद को भी न था तो हसनी सादात जो खानदानी दूसरी शाख़ में थे, मगर यह आपका वही जज़बात से बुलन्द होना था कि आपकी तरफ से कभी कोई इस तरह की कोशिश नही हुई और आप कभी किसी ऐसी तहरीक से नहीं जुड़े बल्कि ज़रूरत पड़ने पर अपने ज़माने की हुकूमत को इस्लाम के फ़ायदों को बचाने के लिए उसी तरह मशवरे दिये जिस तरह आपके दादा हज़रत अली इब्ने अबी तालिब अपने दौर की हुकुमतों को देते रहे थे। तो रूमी सिक्कों के बजाए इस्लामी सिक्का आप ही के मशवरे से चला जिसकी वजह से मुसलमान अपने कारोबार में दूसरे के भरोसे नहीं रहे।

इसके बावजूद भी कि ज़माना आपके वालिद बुजुर्गवार हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन (अ0) के ज़माने से बेहतर मिला। यानि उस वक़्त मुसलमानों का डर व ख़ौफ़ अहले बैत (अ0) के साथ जुड़ने से कुछ कम हो गया था और उनमें उलूम अहले बैत से लगाव बड़े ज़ोक़–शौक़ के साथ पैदा हो गया था कोई दूसरा होता तो इस इल्म को सियासी मक़सद हासिल करने का ज़रिया बना लेता मगर ऐसा नही हुआ और हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) मुसलमानों के बीच एक तरह से आम मक़बूलियत हासिल होने के बाद भी सियासत से अलग रहने में अपने वालिद बुजुर्गवार के रास्ते पर ही रहे।

बेशक ज़माने से आपने कर्बला के वाक़ेआत के बयानों को फैलाने में फ़ायदा उठाया। अब कर्बला के वाक़ेआ पर अशआर लिखे जाने लगे और पढ़े जाने लगे। इमाम ज़ैनुल आबिदीन का

बक़िया पेज 5 पर..................

एक सबक़ इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहब क़िब्ला ताबा सराह

अनुवादक – सै0 फ़राज़ अहमद जायसी

खुदा के वजूद की अक़्ली दलीलें

फ़ितरत की रहनुमाई से हट कर हमारी अक़्ल भी बताती है कि कायनात, समझदार और जानने वाले पैदा करने वाले के बिना सामने नही आई है क्यों कि काम दो तरह के होते हैं एक वह जिनमें इल्म और इरादे का हाथ नही होता किसी हादसे के नतीजे में होते हैं जैसे ज़लज़ले के झटकों, आँधी या तूफ़ान से इमारतों का गिर जाना या ज़मीन में ग़ार और गढ़े पड़ना। दूसरे वह काम है जिनमें हुक्म और समझ का हाथ होता है जैसे किसी इमारत की तामीर, किसी मशीन का बनाना, चाहे हमें पता न हो कि काम को अन्जाम देने वाला कौन है वह जानने वाला और समझने वाला था या नहीं और उसका उस से क्या मक़सद था लेकिन खुद काम बताता है कि यह किसी हादसे का नतीजा है या किसी अक़्ल और होश वाले का किया हुआ है। अगर इस काम में तरीक़ा और सलीक़ा है किसी तरीक़े का पता चलता है। घर भी अगर मिट्टी का बना होता है लेकिन उसे देखकर समझ लेते हैं कि किसी ने उसको बनाया है और मिट्टी के ढेर को देखकर यह फैसला नही करते बल्कि कहते हैं कि मुमकिन है कि हवाओं, थपेड़ों और पानी के बहाव से एक जगह मिट्टी इकटठा हो गई हो। जब हमारी अक़्ल यह फैसला कर देती है कि जहाँ कोई तरीक़ा और सलीक़ा चलता है और कोई इरादा होता है वह काम किसी समझदार और जानने वाले का किया होता है तो क्यो इस बडी कायनात में जिस छोटी से छोटी, बड़ी से बड़ी चीज़ को हम ने देखा इसमें तरीक़ा और सलीक़ा व इरादा नही मिला बल्कि इन्सान की बनायी हुई चीज़ों की हिकमतों और वजहों को आसानी से समझा जा सकता है, लेकिन इस कायनात की छोटी से छोटी मख़लूक़ में जो वजह छुपी होती हैं उनकी हदों को मालूम कर लेना बड़े से बड़े समझदार के बस में नहीं है। एक इन्सान के जिस्म में अरबों जिन्दा जरासीम पाये जाते है जो इतने छोटे होते हैं सिर्फ खूर्दबीनों से ही नज़र आते हैं मगर यह ग़िज़ा भी खाते हैं और अपनी तादाद भी बढ़ाते हैं इनमें से हर एक का काम बटा हुआ है, कोई एक दूसरे के काम में हाथ नही डालता। इनमें कितनी समझदारियाँ हैं और यह अपने काम समझदारी के साथ किस तरह अन्जाम देते हैं अभी तक इन्सान इस राज़ को नही पहुँच सका और न जाने कितने राज़ छुपे हुए हैं जिनको आने वाला ज़माना खोलेगा।

ख़याल हो सकता है कि कायनात बहुत बड़ी है और हमारा इल्म इसके मुक़ाबले में बहुत थोड़ा सा है और कायनात की बड़ाई के मुक़ाबले में हमारा इल्म ऐसा ही है जैसे घनी अंधेरी रात में कोई माचिस की तीली जला दी जाय और उसके आस पास रोशनी हो जाय वह इतनी दूर देख सकेगा जहाँ तक उसकी माचिस की तीली की रोशनी पहुँची है। इससे आगे की कोई ख़बर

नही। अपने इल्म की रोशनी ने हमको जहाँ तक देखने का मौक़ा दिया, इसके लिये हम यह कह सकते हैं कि इसमें तरीक़ा और सलीक़ा पाया जाता है मगर इसके आगे क्या है? तरीक़ा है या बेतरीक़ा हमें नहीं मालूम!

इसके जवाब में कहा जा सकता है कि अगर हम दो सौ पेज की एक किताब को पढ़ना शुरु करें और अभी सिर्फ दो ही पेज पढ़े हों जिनमें बहुत ही क़ाबलियत की इल्मी बातें सुलझाई गई हों, गहरी बातें हो तो क्या हम फैसला नही कर सकते कि इस लेखक की पूरी किताब बेसलीक़ा नही हो सकती मालूम नहीं कितनी इल्म और समझदारी की बातें हों जितना आगे पढ़ते जायेंगे उतना ही हमारे इल्म में बढ़ोत्तरी होती जायेगी।

ऐसे ही अगर हम किसी क़िले के एक कमरे में क़ैद कर दिये जायें और उसमें सही नक़्श व निगार, दीवार की मज़बूती, ख़िड़कियों और रौशनदानों का ठीक जगह पर होना ये साबित करने के लिए काफी है कि इसका बनाने वाला एक अच्छा इंजीनियर था चाहे बाक़ी क़िला हम ने देखा भी न हो। ऐसे ही कायनात के बारे में जो हमारे इल्म में आ सके उसमें समझदारी और सलीक़े का होना इस बात की दलील है कि बनाने वाला समझदार और जानने वाला है।

बक़िया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर.

....

गिरया आपकी ज़ात तर महदूद न था और अब दूसरों तरग़ीब शौक़ दिलाया जाने लगा। इसके अलावा आले मोहम्मद की उलूम के फैलाने के फ़रीज़े को खुलकर अन्जाम दिया गया और दुनिया के दिल पर इल्म की रोशनी का सिक्का बिठा दिया गया। यहाँ तक कि अपके ख़िलाफ रहने वाले भी आपको ''बाक़िरुल उलूम'' मानने पर मजबूर हुए जिसका मतलब ही है ''इल्म की छुपी हुई बातों को सामने लाने वाले'' इस तरह साबित कर दिया कि आप अपने किरदार में उन्ही अली इब्ने अबी तालिब (अ0) के सही जानशीन है जिन्होंने पच्चीस साल तक इस्लामी सलतनत के बारे में अपने हक़ के हाथ से जाने पर सब्र करते हुए सिर्फ इल्म और इस्लाम को बचाने का काम अन्जाम दिया। वही विरासत थी जो सीना बसीना हज़रत मोहम्मद बाक़िर (अ0)तक पहुँची थी। न ज़माने के हालात ने उसको पुराना किया और न उस रंग को हलका बनाया था। न बराबर जुल्मों के असर से बदले के जज़्बे ने उनको बुनियादी ज़िन्दगी के मक़ासिद को भूलने दिया।

अक़वाले इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम

६ जो शख़्स किसी मुसलमान को धोका दे या सताए वह मुसलमान नही।

६ यतीम बच्चों पर माँ–बाप की तरह मेहरबान रहो।

६ खाने से पहले हाथ धोने से फ़क़्र कम होता है और खाने के बाद धोने से गुस्सा।

६ बदतरीन शख़्स वह है जो अपने को बेहतरीन शख़्स ज़ाहिर करे।

इस्लाम में माँ का दर्जा

मौलाना मोहम्मद सुहुफी साहिब
अनुवादक – जनाब फसाहत हुसैन साहिब

यहाँ तक कि जब (एडिसन) उसने स्कूल में (वह तीन महीनों से ज़ियादा स्कूल नही गया) उस्ताद से कई पेचीदा सवाल किये तो उसका लक़ब 'अहमक़' पड़ गया। इसी बुनियाद पर एक दिन एडिसन रोता हुआ स्कूल से वापस घर पहुँच गया और अपनी माँ को सारा हाल कह सुनाया। माँ, बेटे का हाथ पकड़ कर स्कूल पहुँची और एडिसन के उस्ताद ने कहाः ''तू नही जानता कि तू क्या कह रहा है। मेरा बेटा तुझसे ज़ियादा अक़्ल रखता है मैं इसे घर ले जा रही हूँ और खुद इसकी पढ़ाई और देखभाल कर लूँगी और फिर तुझे दिखाऊँगी कि इसमें क्या खूबियाँ छुपी हुई हैं।''

यह थी उस माँ की अजीब और ग़रीब पेशीनगोई। इसके बाद जैसा कि उसने कहा था उसने अपने बेटे की पढ़ाई–लिखाई शुरु कर दी।

एडिसन के घराने का एक दोस्त इसके बारे में यूँ लिखता है : ''जब मैं कभी–कभी एडिसन के घर के सामने से गुज़रता तो एडिसन की माँ को डयोढ़ी के सामने बैठे हुए अपने बेटे को पढ़ाते देखता, वह डेयोढ़ी, पढ़ाई का कमरा थी और एडिसन उसका अकेला शागिर्द था। इस लड़के की हरकतें अपनी माँ की तरह थीं। वह अपनी माँ से बहुत ज़ियादा मुहब्बत करता था, जब इसकी माँ कोई बात कहती तो वह बहुत ध्यान से सुनता। यूँ कहा जा सकता था कि इसकी माँ इल्म और समझदारी का समुन्द्र है..........''

अपनी माँ की कोशिशों की वजह से एडिसन ने 9 साल की उम्र से पहले ही गिबन (Gibbon), हियूम (Hume), अफ़लातून (Plato), और शैक्सपियर (Shakespeare), जैसे लेखकों की मुश्किल किताबें पढ़ डालीं। इस समझदार और अक़्ल वाली माँ ने इनके अलावा इसे भूगोल, इतिहास, गणित और एख़लाक़ की तालीम भी दी। एडिसन तीन महीनों से ज़ियादा स्कूल नहीं गया और उसने बचपन में जो सीखा वह अपनी माँ से सीखा। एडिसन की माँ हर तरह से उसकी उस्ताद थी क्योंकि उसने सिर्फ उसकी पढ़ाई–लिखाई की तरफ ही नहीं ध्यान दिया बल्कि इस बात का भी ख़याल रखा कि अपने बेटे की फितरी खूबियों का पता लगाकर उन्हें आगे बढ़ाय। बाद में जब एडिसन बड़ी जगहों पर पहुँचा तो उसने कहाः ''मुझे बचपन में ही मालूम हो गया था कि माँ कितनी अच्छी चीज़ है। जब उस्ताद ने मुझे अहमक़ कहा था तो उसने मेरा बचाव किया था। मैंने पक्का इरादा कर लिया कि मैं साबित कर दूँगा कि मेरी माँ ने मेरे बारे में ग़लत राय नही बनाई थी।''

उसने यह भी कहा : ''मैं अपनी माँ की पढ़ाने और सिखाने के असर से कभी भी अलग नही हो सकता, अगर वह मुझे शौक़ न दिलाती तो शायद में ईजाद करने वाला न बनता। मेरी माँ का अक़ीदा यह था कि बहुत से लोग जो बालिग़ होने के बाद बुरे हो जाते हैं अगर बचपन में उनको पढ़ाने और सिखाने की तरफ ज़ियादा ध्यान दिया जाय तो वह माहोल के निकम्मे लोग न बनें। जो तजुर्बे मेरी माँ ने अपने पढ़ाने के ज़माने में हासिल किये थे उन्होंने उनको इन्सान

के बहुत से राज़ों को खोल दिया था। मेरी हालत हमेशा से बेपरवाही की थी। अगर मुझे माँ का ध्यान न मिलता तो इस बात का पक्का शक था कि मैं सही रास्ते से भटक जाता लेकिन उनकी नेकी और जमकर लगे रहना ऐसी ताक़तवर बातें थीं जिन्होंने मुझे रास्ते से हटने और गुमराह होने से बचाये रखा।''

सैमवेल इस्माएलज़ कहता है : ''बच्चे को एख़लाक़ सिखाने के लिए मिसाल और नमूना बहुत ख़ास है और अगर कोई शख़्स चाहे कि उसके बेटे अच्छे एख़लाक़ और नेक खूबियों के मालिक हों तो ज़रूरी है कि वह उनके लिए अच्छे नमूने सामने लाए। बहरहाल वह नमूना जो हमेशा बच्चे की नज़रों के सामने रहता है खुद उसकी माँ है।''

अच्छी शख़्सियत वाली और हमदर्द माएँ खुद तकलीफ उठाकर अपने बच्चों की अच्छी ज़िन्दगी की बुनियाद रखती हैं और उन्हें आइन्दा ज़माने के लिए तैय्यार करती हैं। इसके उलट जो माएँ नादान और खुदग़र्ज़ होती हैं वह अपने बुरे कामों की वजह से अपनी औलाद का आने वाला ज़माना ख़राब कर देती हैं।

विल डियोरन्ट, माँ–बाप के काम औलाद पर गहरे असर होने के बारे में एक बहस के दौरान कहता है : ''बहुत अच्छा घर, बहुत अच्छा स्कूल और बहुत अच्छी दूसरी चीज़ वह है जिसमें हुक्म कम चलाया जाय। इस बात को बहुत अच्छी तरह देखा जा सकता है कि किस तरह एक बच्चे को डराये बग़ैर या हुक्म दिये बग़ैर अच्छी आदतों वाला बनाया जा सकता है। अगर यह आज़ाद तरीक़ा किसी वक़्त नतीजे देने वाला नही होता तो अक्सर इसकी वजह यह होती है कि हम माँ–बाप जो बातें अपनी औलाद से कहते हैं उस पर खुद अमल नही करते हैं हम उन्हें बराबरी का हुक्म देते हैं लेकिन खुद खाने पीने के मामले में बेकार ख़र्च करते हैं। हम मेहरबानी करने को कहते हैं लेकिन खुद लोगों के सामने लड़ते–झगड़ते हैं।

हम बच्चों को मिठाई खाने और मार–धाड़ से भरपूर फिल्में देखने से मना करते हैं लेकिन खुद इन चीज़ों को चोरी छुपे जायज़ समझते हैं यहाँ तक कि एक दिन बच्चों पर भी भेद खुल जाता है।

हम नर्मी के हिदायत ठीक तरह से और अदब की नसीहत झुककर करते हैं। हम बच्चे से नर्मी और झुकने के चाहत रखते हैं लेकिन अपने आप को एक हार न मानने वाले खुदा की तरह ज़ाहिर करते हैं।

और जो कुछ हम कहते हैं बच्चे इससे नही बल्कि हमारे किरदार से सबक़ हासिल करते हैं और उनके बेसुकूनी और हटधर्मी की वजहयह होती है कि वह हमारे पिछले कामों के रास्तो पर चलते हैं।

अपने बच्चों को लाकर मुझे दिखाओ ताकि मैं बता सकूँ कि तुम खुद कितने पानी में हो। अगर तुम अपने बच्चे से अदब चाहते हो तो खुद भी अदब करने वाले बनो। अगर तुम उससे पाकीज़गी चाहते हो तो खुद भी पाकीज़ा बनो। किसी और चीज़ की ज़रूरत नही है।

यहाँ तक कि अगर सख़्त गुस्से की हालत में भी तुम ज़ालिमाना रवैया चुनोगे और सख़्त अल्फ़ाज़ कहोगे तो पैरवी के तौर पर बच्चे की याददाश्त पर सख़्त और कड़वी बातें छप जायेंगी। अच्छी तरीके बराबर सब्र के साथ नमूने और मिसाल देकर सिखाये जाते हैं। यह मुश्किल काम है और किसी हद तक इस बात को चाहता है कि हम खुद फिर से नये तरीक़े से अपने आपको सिखायें।'' (लज़ाएज़ फलसफा अज़ विल डेवरेन्ट)

इस्लाम, माँ–बाप का सीधे रास्ते से हटा होना ही लोगों का सीधे रास्ते से अलग होने की एक बड़ी वजह मानता है और रसूल अकरम (स0) खुले तौर पर एलान फरमाया है कि हर बच्चा दुनिया में एक पाक, तौहीद पसन्द फितरत और एख़लाक़ी बड़ाई के साथ आता है और यह माँ–बाप हैं जो बुरी सीख देकर अपनी औलाद को सरकश और बुरा बना देते हैं और कभी–कभी कुफ्र और शिर्क की तरफ ढकेल देते हैं।

(सफीनतुल बहार पेज–373)

औलाद के दिमाग़ पर माँ–बाप के इसी न रोकने वाले असर की बुनियाद पर इस्लाम के बड़े पेशवाओं ने माँ–बाप को अच्छी सीख के बारे में बेहद ताकीद की है और इस बारे में जो तकलीफ वह उठाते हैं उनकी इस बड़ी कोशिश को माना है।

रसूल अकरम (स0) ने फरमाया है :

''अपनी औलाद की इज़्ज़त करो और उन्हें सही आदाब सिखाओं ताकि तुम अल्लाह की रहमत और माफी के हक़दार बन जाओ।''

(मकारिमुल एख़लाक़ पेज–255)

एक और जगह आप फरमाते हैं :

''अगर तुम अपने बेटे को अच्छी सीख दो और नेक आदाब सिखाओ तो यह हर रोज़ अपने माल का कुछ हिस्सा अल्लाह के रास्ते में खर्च करने से अच्छा है।'' (मकारिमुल एख़लाक़ पेज–255)

एक और रिवायत में हजूर सरवरे कायनात (स0) से नक़ल किया गया है कि आप ने फरमायाः

''जब कोई मर जाता है तो तीन चीज़ों के सिवा बाक़ी चीज़ों के बारे में उसका नाम–ए–आमाल बन्द हो जाता है और दुनिया से उसका तअल्लुक़ कट जाता है :

1– ऐसे अच्छे काम जो उसने अपनी ज़िन्दगी में अन्जाम दिये हों और जिनसे लोगों को हमेशा फायदा पहुँचता रहे। (सदक़ा–ए–जारिया)

2– कोई ऐसा इल्म अपने पीछे छोड़ा हो जिससे लोग फायदा उठाते रहें।

3– अपने पीछे नेक बेटा छोड़ गया हो जो उसके हक़ में दुआ करे।'' (राहे तकामुल पेज–144)

जब माँ–बाप अपने बच्चों को सही सीख का फर्ज़ अदा कर दें तो यही सीख उनके माँ–बाप होने के हक़ की ज़मानत होती है और वह नेक औलाद रखने के फायदे उठाते हैं और यही वह मुक़ाम है जहाँ इस्लाम औलाद से कहते हुए उसे माँ–बाप के बारे में सिफारिश करता है।

इमाम सादिक़ (अ0) फरमाते हैं :

''माँ–बाप के साथ नेकी और एहसान करना खुदा को पहचानने की दलील है क्यों कि कोई और इबादत माँ–बाप के एहतराम की तरह अल्लाह तआला को खुश नही करती।''

(मिस्बाहुश्शरीअह पेज–48)

इमाम बाक़िर (अ0) फरमाते हैं :

''चार चीज़ें ऐसी हैं जो अगर किसी शख़्स में हो तो अल्लाह तआला उसे जन्नत में घर देगाः–

1– यतीमों की ज़िम्मेदारी उठाना और उन्हें पनाह देना।

2– मजबूर और बेसहारा लोगों पर रहम करना।

3– माँ–बाप के लिए मेहरबानी वाला दिल रखना और नेक रास्ता चुनना।

4– अपने मातहतों और ख़िदमत करने वालों से अच्छा सुलूक करना और नर्मी से पेश आना।''

(ख़िसाले सदूक़ जिल्द–1 पेज–106)

जारी....................

पर्दा औरत का बेहतरीन मुहाफ़िज़

मोहतरमा अतिया बाक़िर
अनुवादक – सै0 फ़ैज़ अहमद जायसी

पर्दे के सिलसिले में बयान किये जाने वाले फ़लसफ़े में अक्सर वह वजहें थीं जिन्हें पर्दे की ख़िलाफ़त करने वालों ने खुद गढ़ लिया था। अगर यह बहस करने वाले इस मसअ्ले को ग़ैर जानिबदाराना तरीक़े से जाँचते तो उन्हें मालूम हो जाता कि इस्लामी पर्दे के फ़लसफे को उनकी किसी बेकार और बेबुनियाद बातों से दूर का भी वासता नही है।

इस्लाम ने औरत के लिए जो पर्दा वाजिब बताया है इससे मुराद यह नही कि वह घरसे बाहर न निकले। इस्लाम औरतों को घरों में बन्द रखने या क़ैदी बनाने की हिमायत नही करता, औरतों को सख़्ती के साथ घरों में बन्द रखने की जो रस्म पुराने हिन्दुस्तान और ईरान में पायी जाती थी, इस्लाम में बिलकुल नही पायी जाती। इस्लाम में औरत का पर्दा यह है कि वह मर्द के साथ रहन–सहन में अपने बदन को पूरी तरह से ढाँकें और न दिखाये इसके बारे में कुर्आन मजीद में आयतें भी इस मतलब को साफ करती हैं इसके अलावा फुक़हा के फ़तवे भी इस बात की ताईद करते हैं।

औरत की शराफत इस बात को चाहती है कि वह जब घर से बाहर निकले तो सीधी और शरीफ हो और चाल–ढाल और कपड़ों में वह तरीक़ा चुने जिससे किसी के जिन्सी जज़बात न भड़कें। वह अपने काम से किसी मर्द को अपनी तरफ न बुलाए। अगर वह बहुत ही सादगी और ख़ामोशी के साथ आने जाने का सिलसिला रखे तो क्या यह बात औरत की हैसियत यह समाज की ज़रूरतों के ख़िलाफ है या इससे किसी की आज़ादी छिनती है। हाँ अगर कोई यह कहे कि औरत को घर की चार दीवारी में क़ैद कर देना चाहिए, उस पर बाहर आने–जाने के रास्ते बन्द कर देने चाहिए तो यह बात औरत की फितरी आज़ादी और इन्सानी हुक़ूक़ के ख़िलाफ है और यह बात ग़ैर इस्लामी पर्दो में तो पायी जाती है मगर इस्लामी पर्दो में न तो पहले कभी थी और न अब है।

आप अगर ओलमा और फुक़हा से पूछें कि क्या औरत का घर से बाहर जाना हराम है? तो जवाब मिलेगा नहीं। क्या औरत का मर्द से लेन–देन हराम है? तो जवाब मिलेगा नहीं। क्या औरत का महफ़िलों, मजलिसों या इज्तेमाआत में जाना मना है? जवाब फिर नहीं में होगा। तमाम औरतें महफिलों, वाज़ व नसीहत के जलसों में जाती थीं और हैं मगर किसी ने उनसे नही कहा कि इन महफिलों में औरत का जाना हराम है जिसमें मर्द भी हों। क्या औरत के लिए इल्म हासिल करना, फन या हुनर सीखना और इन खूबियों को सामने लाना और उनको पूरा करना हराम है जो खुदा तआला ने उसके वजूद में समा रखे हैं? जवाब यहाँ नहीं ही होगा।

मसले सिर्फ दो हैं :–

एक शरअी तरीक़े से बदन का छुपाना

यानि पर्दे से औरत की हिफ़ाज़त और दूसरे खुद को दिखाना यानि बेपर्दगी और जिन्सी चाहतों को उभारने वाली हालत में औरत के बाहर जाने की रोक।

इस्लामी तारीख़ गवाह है कि पैग़म्बरे इस्लाम (स0) खुद अपनी बीवियों को बाहर निकलने से नही रोकते थे बल्कि उन्हें इजाज़त दे रखी थी कि वह अपने कामों को पूरा करने के लिए घर से बाहर जायें। इससे मालूम होता है कि पर्दा औरत की काम–काज की ताक़तों को बरबाद नही करता है बल्कि पूरे समाज के काम करने की ताक़त को एक अदब वाला और ग़ैर मामूली ताक़त देता है। पर्दा इन्सान के ज़मीर को मुर्दा नही होने देता बल्कि उसको ज़िन्दगी देता है।

दुनिया मुझे बताये कि औरत के लिये सादगी के साथ सही तरीक़े से काम पर जाना समाज के लिए अच्छा है या यह कि वह बाहर निकलने से पहले घंटों सिंगार मेज के सामने अपना क़ीमती वक़्त बर्बाद करे और जब बाहर निकले तो तमाम मर्दो की नज़र को अपनी तरफ ध्यान देने की दावत दे और उन नौजवानों को जिन्हें समाज के अज़्म वा इरादे और कारगुज़ारियों का मज़हर होना चाहिए उन्हें एक बेकार और हवसनाक और चाहत की पैरवी करने वाले माद्दे में बदल दे। अगर लड़कियाँ इज्तेमाआत में सादा कपड़े और सादे चप्पल जूते पहनें और पर्दे की रिआयत के साथ स्कूल कालेज और यूनिवर्सिटी जायें तो क्या ऐसी सूरत में वह अच्छी तरह से तालीम नही हासिल कर सकतीं।

मुख़्तसर यह कि इस्लाम जो अल्लाह तआला का बनाया हुआ सबको इकटठा करने वाला और बराबरी करने वाला क़ानून है और हर तरह की कमी ज़ियादती से पाक है उसने मुस्लिम उम्मत को दरमियानी उम्मत क़रार दिया है। तो यह मुकम्मल दीन जिस तरह पाक दामनी के घेरे के टूटने के ख़तरों की तरफ पूरी तरह ध्यान लगाये हुए है, पूरी तरह देख रहा है उसी तरह वह इन दूसरे मामलात से भी अन्जान या लापरवाह नही है तो वह औरतों को इज्तेमाआत में जाने से इस हद तक नही रोकता जहाँ तक वह बुराई से बची रहें।

पूरी तरह यह नतीजा निकलता है कि इस्लाम न तो औरत को घर की चार दीवारी में क़ैद कर देने की उस हालत का नाम है जिससे से इस्लाम के ख़िलाफ रहने वाले इस्लाम पर इल्ज़ाम लगाते हैं और ऐसी बेलगामी है जिसे आज की दुनिया ने अपना रखा है और जिसके गन्दे और घिनावने नतीजे सामने आ रहे हैं इस्लाम का यह कहना है कि न अलग रहो और न इकटठा हो जाओ। बल्कि पर्दा न जाने कितनी समाजी बीमारियों को एक असरदार और अकेला इलाज है और औरत की हर तरह की हिफ़ाज़त के लिए एक बहुत अच्छी ढाल है। पर्दा एक ऐसी लकड़ी है जिसके सहारे औरत कहीं भी लड़खड़ाने से बचती रहती है।

इस ज़माने में हम माओं की ज़िम्मेदारी है कि हम अपनी बच्चियों को इसकी अहमीयत व बड़ाई घुट्टी में इस तरह पिला दें कि पर्दे की मुख़ालेफत करने वाले माद्दे और जरासीम उन पर असर न करने पायें। अगर हम वाक़ई अपनी बेटियों से मुहब्बत करते हैं तो हम यह कैसे बर्दाश्त कर लेते हैं कि ज़माने की गन्दी निगाहों के सामने इनको यूँ ही छोड़ दें और यह बच्चियाँ उन ग़लत निगाहों के ज़हर भरे तीरों से बराबर ज़ख़्म खाती रहें। यह मुहब्बत नही है इन बच्चियों पर ज़ुल्म है कि हम उनके

पर्दे की बड़ाई और उसके फायदे की ख़बर न दें और इसके पुरानी बात समझें। कल जब उन्हें अन्दाज़ा होगा तब बहुत देर हो चुकी होगी। जब यही बेटियाँ खुदा न करे कोई नुक़सान उठा चुकी होंगी उस वक़्त अगर यह पलट कर हम से सवाल करेंगी कि अम्माँ आपकी हर बात तो हम ने मानी आपने चाहा कि हम ने अच्छी तालीम और उसके अच्छे नतीजे आपको लाकर दिखाये। अपनी सारी ताक़त और कोशिश उस पर लगा दी कि हम अच्छा पढ़ें, अच्छा लिखें और अच्छे ओहदे पर क़ायम हों मगर हमारे मज़हब, हमारे इस्लाम की जो बड़ी नेअ्मत थी जिसके रास्ते हम दुनिया और आख़रत दोनों में न जाने कितना ऊँचा दर्जा हासिल कर सकते थे जिसके रास्ते पाकी और बड़ाई के हक़दार हो सकते थे उससे आपने हम को महरूम रखा। आप उसके फायदे बतातीं तो क्या हम क़बूल न करते, आप उसकी कभी न ख़त्म होने वाली बड़ाईयों का बतातीं तो क्या हम सुनने से इन्कार कर देते आप हम को इस शरीअत के हुक्म पर अमल करने को कहतीं तो क्या हम आपकी पैरवी न करते? बताइये क्या इससे बेबस और लाचार शिकवे का कोई जवाब होगा हमारे पास। हम माँ–बात तो दुनियावी मामलात में सब कुछ अपने बच्चों पर लुटा देना चाहते हैं, दीनी मामलों में हम इतने कन्जूस हो जाते हैं कि उन्हें कुछ देना ही नही चाहते। दुनियावी तालीम और सीख और अपने रौशन मुसतक़बिल के लिए हमारे बच्चे इतनी तकलीफ उठाते हैं, भाग–दौड़, भूख–प्यास और न जाने कितनी मुसीबतों से गुज़रते हैं, हम बहुत खुश होते हैं कि हमारे बच्चे बड़े मेहनती, बड़े कोशिश करने वाले हैं लेकिन कोई भी शरअी तकलीफ उठवाने में हम को अपने बच्चों पर बड़ा तरस आने लगता है हम अपनी अन्धी और बेकार मुहब्बत से उनको इतना लाचार और इतना ग़रीब बना देते हैं कि उनके पास अपने को बचाने और हिफ़ाज़त करने का कोई सामान नही होता है।

इसलिए बहुत ज़रूरी है कि हम दुनियादारी के जादू के जाल से बाहर निकलें और बेटियाँ जो हमारी क़ौम की बड़ी दौलत हैं जिनके हाथों में आने वाले दौर की बागडोर हमको थमानी है उन्हें उनकी क़द्र व क़ीमत का एहसास दिलायें। यह हमारे ज़मीर की आवाज़ है उसे नज़र अन्दाज़ न करें और जो हक़ीक़त में इस्लामी पर्दा है जिसकी हदें कुर्आन मजीद खुद बयान कर रहा है उससे उन्हें आगाह करें। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम सीरते मासूमा–ए–आलम की रोशनी में अपनी और अपनी बच्चियों के ज़हनी मेयार को ऊँचा करने की कोशिश करें इसी में हमारी दुनिया और आख़रत दोनों के फायदे छुपे हुए हैं।

हमारा लाखों सलाम उस पर्देदार इज़्ज़त पर जिसने पर्दे में रहकर इस्लामी क़द्रों को इतना बड़ा कर दिया कि जिनकी बड़ाई आज भी पुकार–पुकार कर कह रही है कि मेरी शहज़ादी वह है कि :

किसा में आई तो पन्जतन के शर्फ की पहचान बन गई है
निसा में बैठी तो तरबियतगाहे दीनो ईमान बन गई है
सिमट के सोचा तो "बा" के नुक़्ते के ज़ेर की शान बन गई है
बिखर के सोचा तो फातमा (स0) खुद तमाम कुर्आन बन गई है
जहाँ में रमज़े शऊरे वहदत की आरिफा है अमीं है ज़हरा
मुबाहले की सफों में देखों तो दीं की फत्हे मुबीं है ज़हरा

क्यों? क्या अमीरुलमोमिनीन ने अपनी ख़िलाफत पर हदीसे ग़दीर से दलील दी?

आयतुल्लाह नासिर मकारिम शीराज़ी
आयतुल्लाह जाफ़र सुबहानी मददा जिल्लहोअल आली

सवाल :– जैसा कि हम जानते हैं कि ग़दीर के दिन रसूले अकरम (स0) ने अमीरुलमोमिनीन (अ0) की जानशीनी और ख़िलाफत का एलान फरमाया और उनकी पैरवी और बात मानना सारे मुसलमानों पर वाजिब कर दिया। अब सवाल यह पैदा होता है कि :

''जब अमीरुलमोमिनीन की जानशीनी का उस दिन एलान हो गया तो फिर इमाम (अ0) ने अपनी तमाम उम्र में अपनी ख़िलाफत को साबित करने के लिए इस हदीस से क्यों दलील नहीं दी?''

जवाब :– जो कुछ सवाल कहा गया है उसके उलट इमाम (अ0) ने अपनी ज़िन्दगी में कई बार अपने हक़ और ख़िलाफत पर हदीसे ग़दीर से दलील दी है। आप मौक़े के हिसाब से अपने मुख़ालिफ को हदीसे ग़दीर सुनाते थे और यूँ लोगों के दिलों में अपनी अज़मत का नक़्श बनाया करते थे।

सिर्फ इमाम (अ0) ने ही नहीं बल्कि रसूले अकरम (स0) की अज़ीज़ बेटी हज़रत फातिमा (अ0) उनके नेक बेटे हज़रत इमाम हसने मुजतबा (अ0) और सैय्यदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन (अ0) ने और कई बुजुर्ग इस्लामी शख़्सियतों ने जैसे अब्दुल्लाह बिन जाफर, अम्मारे यासिर, असबग़ बिन नुबातह, क़ैस बिन साद, उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ और अब्बासी ख़लीफा मामून ने यहाँ तक कि आपके कुछ मुख़ालिफ जैसे अम्र बिन आस वग़ैरह ने भी हदीसे ग़दीर से दलील दी है।

इसलिए हदीसे ग़दीर से दलील ख़ुद अमीरुलमोमिनीन (अ0) के वक़्त से दी जाती रही है और हर ज़माने में आपके चाहने वालों ने हदीसे ग़दीर को आपकी इमामत और विलायत की दलीलों में गिना है। हम यहाँ दलील के कुछ नमूनों की तरफ इशारा करते हैं।

1– शूरा के दिन (शूरा के मिम्बरों को ख़लीफएदोम के हुक्म से चुना गया था और और मिम्बरों की तरकीब कुछ इस तरह थी कि सभी समझ रहे थे कि ख़िलाफत हज़रत अली (अ0) के सिवा किसी और को मिलेगी) जब ख़िलाफत की गेंद अब्दुर्रहमान बिन औफ के तरफ से उसमान की तरफ फेंकी गयी तो इमाम (अ0) ने शूरा की राय को बातिल साबित करने के लिए तक़रीर की और कहा :

''मैं तुम से एक ऐसी बात से दलील देता हूँ जिसका तुम में से कोई भी इन्कार नही कर सकता।''

फिर फरमाया : मैं तुम्हें ख़ुदा की क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या तुम में से कोई ऐसा शख़्स है जिसके बारे में पैग़म्बर (स0) ने फरमाया हो कि : ''जिसका मैं मौला हूँ अली (अ0) भी उसका मौला है। ऐ परवरदिगार! जो अली (अ0)

को दोस्त रखे उसे दोस्त रख और जो अली (अ0) की मदद करे उसकी मदद कर। और यह बात यहाँ मौजूद लोग उन तक पहुँचा दें जो यहाँ पर मौजूद नहीं हैं। (मनाक़िब ख्वारज़मी पेज–217 वग़ैरह)

उस वक़्त शूरा के मिम्बरों ने सच्चा बताया और कहा कि यह बड़ाई आपके सिवा किसी और को नही मिली है।

इसमें कोई शक नहीं कि हदीसे ग़दीर से इमाम (अ0) का दलील देना उस वक़्त तक ही नही घिरा हुआ था बल्कि दूसरे मौक़ों पर भी आपने इस हदीस से दलील दी जिनकी तरफ नीचे इशारा किया जा रहा है :–

2– एक दिन अमीरुलमोमिनीन कूफा में खुत्बा दे रहे थे, तक़रीर के बीच आपने चेहरा लोगों की तरफ किया और फरमाया :

''मैं तुम्हें खुदा की क़सम देता हूँ तुम में से जो शख़्स ग़दीर में मौजूद रहा हो और उसने अपने कानों से सुना हो कि रसूल (स0) ने मुझे अपनी जानशीनी की इज़्ज़त दी वह खड़ा हो जाय और गवाही दे। लेकिन सिर्फ वह लोग खड़े हों जिन्होंने यह बात रसूले अकरम (स0) से खुद अपने कानों से सुनी हो और वह नहीं जिन्होंने दूसरों से सुनी हो।''

उस वक़्त तीस लोग अपनी जगह पर खड़े हो गये और हदीसे ग़दीर सुनने के बारे में गवाही दी।

यह याद रखना चाहिए कि उस दिन ग़दीर के क़िस्से को पच्चीस साल से ज़ियादा का वक़्त गुज़र चुका था और रसूले अकरम (स0) के कुछ सहाबी उस वक़्त कूफा में न थे या इससे पहले ही ख़त्म हो चुके थे और मुमकिन है कि कुछ लोगों ने किसी वजह की बुनियाद पर गवाही देने से किनारा किया हो वरना गवाहों की तादाद ज़ियादा होती।

मरहूम अल्लामा अमीनी ने इस हदीस को कई जगहों से अपनी नफीस किताब में लिखा है। शौक़ रखने वाले लोग इस किताब को देख सकते हैं। (अलग़दीर जिल्द–1 पेज – 153–171)

3– उसमान की ख़िलाफत के ज़माने में एक दिन मुहाजिरों और अन्सारियों मे से दो सौ लोग मस्जिदे नबवी में इकटठा थे और कई मस्अलों पर बात कर रहे थे। बात के बीच में कुरैश की फज़ीलत, आगे बढ़ना और हिजरत की बात चल निकली तो कुरैश का हर क़बीला अपनी जाने पहचाने लोगों पर फख़्र करने लगा।

यह मजलिस सुब्ह के वक़्त शुरु हुई थी और ज़ोहर तक चलती रही। इस बीच में बहुत से लोगों ने बातें कीं लेकिन अमीरुलमोमिनीन (अ0) सिर्फ उनकी बातें सुनते रहे और कुछ नही बोले। उस वक़्त अचानक लोगों ने आपसे कहते हुए ये दरख़ास्त की कि आप भी कुछ फरमायें।

इमाम (अ0) लोगों के इसरार पर खड़े हुए और रसूले अकरम (स0)से अपने रिश्ते और अपनी पिछली ख़िदमतों के बारे में बात की। इस बीच आपने फरमाया :

''तुम्हें याद होगा कि ग़दीर के दिन अल्लाह ने रसूले अकरम (स0) को हुक्म दिया कि जिस तरह आपने नमाज़, ज़कात और हज की रस्मों के हुक्म लोगों पर ज़ाहिर कर दिये हैं उसी तरह मुझे लोगों का इमाम बनाया है।

और इस काम को पूरा करने के लिये रसूले अकरम (स0) ने इन अल्फ़ाज़ में खुत्बा दिया : ''अल्लाह तआला ने मुझे एक काम के अन्जाम देने का हुक्म दिया है और मैं डरता था कि अगर कुछ लोग खुदा का पैग़ाम पहुँचाने के

बारे में मुझे झुठलायें लेकिन अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है कि मैं वह पैग़ाम पहुँचा दूँ और उसने मुझे तसल्ली भी दी है कि वह मुझे लोगों की बुराई से बचायेगा।'' हाँ! ऐ लोगों! क्या तुम जानते हो कि खुदा मेरा मौला है और मैं मोमिनों का मौला हूँ और मैं उनके लिये खुद उनसे भी ऊपर हूँ!''

उस वक़्त नबी अकरम (स0) ने फरमाया :

''अली! उठो। और मैं उठ खड़ा हुआ। फिर आपने अपना मुँह लोगों की तरफ किया और फरमाया : ''जिसका मैं मौला हूँ उसका अली भी मौला है। ऐ खुदा! उसे दोस्त रख जो इसे दोस्त रखे और उसे दुश्मन रख जो इसे दुश्मन रखे।''

इस मौक़े पर सलमाने फारसी (रजि0) ने रसूले अकरम (स0) से पूछा : ''अली (अ0) हम पर किस तरह की विलायत रखते हैं?''

आप (स0) ने फरमाया : ''तुम पर अली (अ0) की विलायत उसी तरह है जिस तरह तुम पर मेरी विलायत है मैं जिस की जान पर हक़ रखता हूँ अली (अ0) भी उसकी जान पर हक़ रखते हैं।''

(फराएदुस्सिमतैन बाब–58)

4– यह सिर्फ हज़रत अली (अ0) ही नहीं हैं जिन्होंने अपने मुख़ालिफों के जवाब में हदीसे ग़दीर से दलील दी बल्कि रसूले अकरम (स0) की नेक बेटी ने एक तारीखी दिन को अपना हक़ हासिल करने के लिये बात–चीत की तो रसूल (स0) के सहाबियों से कहते हुए फरमाया :

''क्या तुम ग़दीर का दिन भूल गये हो जब पैग़म्बर (स0) ने अली (अ0) के लिये फरमाया :

''मनकुन्तो मौलाहु, फाहाज़ा अलीयुन मौलाहु''

5– जब इमाम हसन (अ0) ने मुआविया से सुल्ह करने का फैसला किया तो खड़े होकर इन अल्फाज़ में खुत्बा दिया :

अल्लाह तआला ने इस्लाम के रास्ते अहलेबैत रसूल (स0) को महबूब रखा और हमें चुना और हमें हर तरह की गन्दगी से पाक किया।

फिर आपने फरमाया : सारी उम्मत ने सुना कि रसूल (स0) ने अली (अ0) से कहते हुए फरमाया : ''तुमसे मेरा वही तअल्लुक़ है जो हारून (अ0) का मूसा (अ0) से था।''

सब लोगों ने देखा और सुना कि ग़दीरे खुम में रसूल (स0) ने अली (अ0) का हाथ पकड़ा और लोगों से कहा : जिसका मैं मौला हूँ बस अली (अ0) भी उसके मौला हैं। ऐ खुदा! इसे दोस्त रख.......... (यनाबीउल मवद्दह पेज–482)

6– हज़रत इमामे हुसैन (अ0) ने भी मक्का की ज़मीन में एक बहुत बड़े मजमे से कहते हुए जिसमें बहुत से रसूल (स0) के असहाब भी थे इस तरह फरमाया :

''मैं तुम्हें खुदा की क़सम देता हूँ क्या तुम्हें जानकारी है कि ग़दीरे खुम में रसूल (स0) ने अली (अ0) को ख़िलाफत और विलायत के लिये चुना और फरमाया : जो इस वक़्त सामने हैं वह (यह पैग़ाम) उन तक पहुँचा दें जो इस वक़्त यहाँ नहीं हैं।''

उन सब ने कहा कि हम गवाही देते हैं।

इसके अलावा कई एक रसूल (स0) के सहाबी जैसे अम्मारे यासिर, ज़ैद बिन अरक़म, अब्दुल्लाह बिन जाफर, असबग़ बिन नबातह (रजि0) और दूसरे लोग इमाम अली (अ0) के ख़िलाफत और विलायत के बारे में इस हदीस से दलील देते थे। (अलग़दीर जिल्द–1 पेज – 146–195)

इदारा

मुख्य समाचार

तमाम जल्सों पर से पाबन्दी हटायी जाए – मौलाना कल्बे जवाद साहिब

लखनऊ 31–दिस्मबर नमाज़ जुमा के मौक़े पर नमाज़ियों के बीच अपने खुत्बे में इमाम जुमा मौलाना सैय्यद कल्बे जवाद साहब ने शाही मस्जिद आसफी में कहा कि हर साल हमारा यह मुतालबा रहता है और आज भी वह क़ायम है कि हज़रत अली (अ0) के जिन जुलूसों की अभी तक इजाज़त नही मिली है और वह रुके हुए हैं उनको भी उठाया जाए। आशूर के दिन जो ज़रीह नही उठ सकती थी हमारा मुतालबा है कि उसको भी उठवाया जाए जो मुआहेदा हुआ था कि मजबूरी में हुआ था हम उस पर कभी खुश नही रहे। मगर क्योंकि मुआहेदा हुआ था इसलिए पाबन्दी हो रही है हमको ख़बर मिली है कि एक बोर्ड अज़ादारी की हिफाज़त के लिए बनाया गया है बड़ी खुशी हुई है कि 27 साल बाद होश आया है इस बोर्ड की ज़िम्मेदारी है कि अज़ादारी के जुलूसों के बारे में हुकूमत से बात करे, जो जुलूस अब तक नही उठ सके है उनको भी उठवाने की कोशिश करे। बात–चीत चलती रहनी चाहिए। उन्होंने कहा कि किसी साहब ने उनसे यह कहा था कि पता यह चले के अज़ादारी को ख़तरा कहाँ है? लखनऊ में या लखनऊ से बाहर, अगर लखनऊ के बाहर अज़ादारी को ख़तरा है तो जल्से भी वही होने चाहिए और अगर लखनऊ में अज़ादारी को ख़तरा है तो उन सभी लोगों को अज़ा के दिनों में लखनऊ में मौजूद रहना चाहिए ताकि इस ख़तरे का मुक़ाबला कर सकें।

मौलाना ने इस्लामी तालीमात का बयान करते हुए कहा कि : इस्लाम ने माल इकटठा करने और बेकार ख़र्च करने पर पाबन्दी लगा रखी है। अपनी मेहनत की कमाई में बेकार ख़र्च को हराम बताया है लेकिन एक रास्ता भी दिखाया है कि अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर इन्सान दुनिया माँगता है तो उसको अल्लाह दुनिया दे देगा मगर आख़िरत से महरूम रखेगा। लेकिन अगर इन्सान आख़िरत माँगेगा तो अल्लाह उसको आख़िरत के साथ–साथ दुनिया भी तोहफे में दे देगा अगर हम अल्लाह के इस क़ानून को समझ जाएँ तो ख़त्म हो जाने वाली चीज़ों के माँगने के बजाय हमेशा रहने वाली चीज़, आख़िरत ही माँगें। मौलाए कायनात (अ0) का क़ौल है कि तुम ने हलाल की कमाई हासिल की है उसका तुमको हिसाब देना होगा। अगर हराम कमाई है तो अल्लाह के अज़ाब से तुम बच नहीं सकते। और अगर तुम्हारी कोई कमाई ऐसी है जिस पर तुमको शक है कि यह हराम की कमाई हो सकती है तो तुम अल्लाह की सज़ा के हक़दार बन जाओगे अब फैसला हमारे हाथों में है कि हमको अपनी कमाई हलाल रखनी है या हराम।

निगराने इस्लाह नम्बर

यक़ीनन इल्म व अमल और बुजुर्ग व पाक शख़्सियतों की बातों को ज़िन्दा रखना और उन्हें आने वाली नस्लों के हवाले करना इलाही और क़ुर्आनी सुन्नत है। इसी सुन्नत पर अमल करते हुए आलिमे जलील मौलाना सैय्यद मोहम्मद बाक़िर जौरासी नव्वरल्लाहु मरक़दहू की वफात के बाद इदारा–ए–इस्लाह ने उन पर ख़ास शुमारा ''निगराँ इस्लाह नम्बर'' निकाला है। 208 पेजों का यह शुमारा मुल्क और मुल्क के बाहर के मशहूर व मारूफ मज़मून निगारों के क़लम से सजा हुआ है। इस शुमारे की एक पहचान यह भी है कि जिन लोगों से मौलाना मरहूम ने किसी भी तरह की मदद ली थी उनकी ज़िन्दगी के हालात भी लिखे हुए हैं। जिससे से इनकी इल्मी बड़ाई का अन्दाज़ा अच्छी तरह लगाया जा सकता है। इसके अलावा रिसाले की एक खूबी यह भी है कि पढ़ने वाला मौलाना मरहूम की ज़िन्दगी के हर हिस्से, किरदार व निसार, तक़वे व ज़ोहद से लेकर लिखने बोलने और तअल्लुक़ात से अच्छी तरह बाख़बर हो जाता है। असर डालने वाले मज़मूनों के अलावा उनके फन पर भी बहस मौजूद हैं। जो कि तारीफ के क़ाबिल और पैरवी की जाने वाली हैं। उम्मीद है कि इल्म वाले लोग इस शुमारे को जल्द से जल्द इदार–ए–इस्लाह से हासिल करके फायदा उठायेंगे।

मौलाना सैय्यद नासिर ज़ैदी की शख़सिय्यत और कारनामों से मुतअल्लिक़ किताब ''अलनासिर की रस्मे इज्रा

अल्लाहमा अदील अख़्तर के बेटे मौलाना नासिर ज़ैदी मरहूम की शख़सियत और कारनामों के मुतअल्लिक़ खास इशाअत ''अलनासिर'' की रस्मे इज्रा खुदा बख़्श लाइबरेरी पटना में डाक्टर इमतियाज़ अहमद के हाथों हुई। जल्से में तक़रीबन 150 लोग शामिल हुए और मरहूम की शख़सियत के बारे में बहुत से मक़ालात पढ़े गए।

हुसैनिया हज़रत गुफ़रान मआब में जनाब सैय्यद सिब्ते रज़ी नक़वी जायसी गर्वनर झारखण्ड का इस्तेक़बाल

12/जनवरी 2004– को झारखण्ड के गर्वनर सै0 सिब्ते रज़ी नक़वी की लखनऊ आमद पर हुसैनिया हज़रत गुफ़रान मआब में ख़ानदाने इज्तेहाद के लोगों और नूरे हिदायत फाउण्डेशन के मिम्बरों ने इस्तेक़बाल किया। गर्वनर साहब पहले तो अपनी वालेदह की क़ब्र पर तशरीफ ले गये और फूल चढ़ाने और फातेहा पढ़ने के बाद इस्तेक़बाल करने वालों का शुक्रिया अदा करने के लिए इमामबाड़े में दाखिल हुए। जलसे की शुरुआत तिलावते कुर्आन पाक और नात ख़ानी से अबुज़र नक़वी ने किया, जलसे की ज़िम्मेदारी के फ़राएज़ जनाब शकील हसन शमसी ने अन्जाम दिये। उन्होंने ख़ानदाने इज्तेहाद की तरफ से एक नज़्म सिपासनामा भी पढ़ी जिसे बाद में गर्वनर साहब की ख़िदमत में ''पासदाराने हुसैन (अ0)'' की तरफ से पेश किया गया।

इसके बाद हैदर अली साहब नायब एडिटर माहनामा ''शुआए अमल'' ने एक तोहफा–ए–इलमी मए हदिय–ए–तबरीक नूरे हिदायत फाउण्डेशन की तरफ से गर्वनर साहब को दिया। इसके बाद मौलाना सैफ अब्बास नक़वी साहब ने जायस व नसीराबाद की नक़विया नस्ल के इल्म और अज़मत का बयान किया। फिर मौलाना आसिफ जायसी ने फ़क़ीहुल अस्र गुलाम नवाब नजमुल मुल्क सब्ज़वारी (सूबेदार सब्ज़वार व फ़ातेह जायस) की बा इल्म व अमल नेक औलाद के हमेशा ऊँचे दर्जों पर फायज़ होने का बयान करते हुए उनके इल्मी, अमली और तहक़ीक़ी कानामों को पेश किया आख़िर में खुद गर्वनर साहब ने अपने वतन जायस और दूसरे वतन लखनऊ की ऊचाइयों और ख़ासियतों को बताते हुए अपनी कारगुज़ारी की बयान तक पहुँचे और इसी बयान के ख़ात्मे पर तमाम हाज़रीन का शुक्रिया अदा किया।

गर्वनर झारखण्ड जनाब सैय्यद सिब्ते रज़ी नक़वी का उनके वतन दारुलउलूम जायस में पुरजोश इस्तेक़बाल

जनाब सैय्यद सिब्ते रज़ी साहिब का जैसा इस्तेक़बाल उमूरे बराए वज़ीरे दाख़ला होने के बाद जायस में हुआ था उससे कहीं ज़ियादा झारखण्ड का गर्वनर बनने के बाद ख़ैर मक़दमी हंगामे मशहूर क़स्बे जायस में निगाहों और दिलों को ठण्डा किये बिना नही रहे। जिस रास्ते पर या जिस मोहल्ले से गुज़रे हज़ारों की भीड़ आखें बिछाये हुए, जगह–जगह लोगों की खुशियों की निशानी थी। बड़े–बड़े इस्तेक़बालिया गेट और बैनर अपनी ख़ामोश जुबान से शायद यही कह रहे थे कि :

"तुम सलामत रहो हज़ार बरस–हर बरस के दिन हों पचास हज़ार"

जायस में हर तरफ बैनरों पर लिखा हुआ था ''विद्या नगरी में आपका हार्दिक अभिनन्दन'', आपकी पवित्र जन्म–भूमि में आपका स्वागत'', धर्म–स्थान जायस आपका स्वागत करता है'', ''अन्जुमने हाशमी के अराकीन आखें बिछाये हुए हैं'', ''ओलमा के शहर जायस में होनहार बेटे का दिल से इस्तेक़बाल'', ''दारुश्शोअरा जायस आपको गर्वनर बनने पर मुबारकबाद देता है'' वग़ैरा–वग़ैरा। यह तो पूरे जायस का हाला है तो घर वाले और ख़ानदान वाले फूले न समा रहे होंगे। मौसूफ़ ने जायस पहुँचते ही अपने वालिदे माजिद की क़ब्र पर फूल चढ़ाने और फातेहा के लिये तशरीफ ले गये और आख़िर में रात होते–होते अपने घर पहुँचे ताकि अपने बड़े भाई जनाब नजात अली नक़बी साहब की दुआएँ लें और अपने चहीते भतीजे जनाब मोहम्मद तक़ी नक़वी साहब की ख़ास दावत में शामिल हों। जनाब सिब्ते रज़ी साहब अपने वतन वालों की सच्ची मोहब्बत और दिली खुशी को देखकर काश खुद भी यह फैसला लें कि हम भी उन चाहने वालों की शादी और ग़म का अपनी ज़िन्दगी में ज़रूर ख़याल रखेंगे।

ज़लज़ले और तूफान की चपेट में आए लोगों के साथ अमली हमदर्दी ज़रूरी

जुनूबी ऐशिया के समुन्द्री इलाक़ों में ज़लज़लों और तूफानों से अनगिनत लोग मौत के घाट उतर गए। और हज़ारों लोग ज़ख़्मी और बेघर हो गए। इन्सानियत की ज़रूरत इसके सिवा और क्या हो सकती है कि ज़बानी हमदर्दी के साथ अमली हमदर्दी भी हो यानि जैसे मुमकिन हो उनकी जान माल से हम इन्सानों को मदद ज़रूर करनी चाहिए।